International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(5): 84-86

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(5): 84-86
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 11-07-2017
Accepted: 12-08-2017

डॉ. रेनू शुक्ला
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा जिला – बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. रेनू शुक्ला
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा जिला – बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन

डॉ. रेनू शुक्ला

संस्कृत वांङमय प्राचीनता, महनीयता एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के कारण विश्वविख्यात है। यह वांङमय संस्कृत ग्रन्थ रत्नों का अक्षय भण्डार है। अद्यापि अनेकशः ग्रन्थ ऐसे हैं, जो विद्वानों के द्वारा पूर्णतया उपेक्षित है, और बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जिनकी समालोचना उनके बहुव्याख्यायित पक्षों पर ही की गयी है। ऐसे महाकाव्यो में संस्कृत वांङमय का विशालतम महाकाव्य हरविजय महाकाव्य एवं वैष्णव सम्प्रदाय का युधिष्ठिर विजय महाकाव्य है।

महाकवि वासुदेव ने अपने महाकाव्य में युधिष्ठिर विजय महाभारत कालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढ़ग से किया है उनके महाकाव्य के अध्ययन से उस समय की सामाजिक स्थिति का चित्रण अन्तःकरण में उपस्थित सा होकर महसूस होता है क्योकि साहित्य ही किसी राष्ट्र के सामाजिक जीवन का व्यापक तत्व है। वैदिक काल से ही सामाजिक व्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिए समाज को चार वर्णो में विभक्त किया है । जिसका उदाहरण ऋग्वेद में इस प्रकार है –

ब्राहमणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्यः कृतः ।
उरु तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत ।।

चार वर्णो में सर्वप्रथम उस विराट पुरुष के मुख से ब्राहमण हुआ, भुजाओं से क्षत्रिय का रुप दिया गया इस पुरुष की दोनों जंघाओं से वैश्य की उत्पत्ति हुई तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।

यह एक दैवीय समाज की परिकल्पना थी जिसे न समझ पाने के कारण आज हमारे समाज में ऊँच–नीच की कल्पना का आरोप शास्त्रों पर लगाया जाता है। न तो हम मुख बिना रह सकते है न भुजाओं के बिना न जंघाओं के बिना और न तो पैरो के बिना इस सब में एक के अभाव में लंगड़े कहलायेंगें। इस प्रकार ब्राहमण ज्ञान सुरक्षा क्षत्रिय बल सुरक्षा वैश्य सम्पत्ति कोष और शूद्र सेवा करना।

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में सामाजिक व्यवस्था

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में वासुदेव ने निम्न बिन्दुओं पर सामाजिक बिन्दुओं पर चित्रण प्रस्तुत किया है –

1. वर्ण व्यवस्था
2. सदाचार
3. अतिथि सत्कार
4. विवाह
5. पति–पत्नी
6. सम्बन्ध
7. स्त्री सम्मान
8. अन्य –

(क) वेश–भूषा (ख) रत्न आभूषण (ग) शारीरिक सौष्ठव (घ) मैत्री भाव (ड.) द्यूत कीडा ।

वर्ण व्यवस्था

महाकाव्य में वर्णित वर्ण व्यवस्था ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के रुप में इस प्रकार है–

यत्र च सांनिध्यमितौ क्षात्त्रो ब्राहमस्तथाम्भ सांनिध्यमितौ।
द्वावपि वेदाचार्यः क्षत्त्राचार्य स कथं भवेदाचार्यः।।

कवि ने अपने महाकाव्य में ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र को अपने –अपने कर्तव्यों में तत्पर रहते थे इससे यह स्पष्ट होता है कि भीष्म पितामह ने भी नित्य दस हजार क्षत्रियों को मारने की प्रतिज्ञाा की थी ।तत्पश्चात कुछ विद्वानों का मानना है कि यह व्यवस्था आर्यो और अनार्यो के रंग भेद के आधार पर की गई–परन्तु ऐसा नही है वर्ण व्यवस्था का मूल आधार गुण और कर्म ही है क्योंकि कर्मणा वर्णारिति जन्मना जातिरिति और यह वर्ण वयवस्था धीरे – धीरे जातमाधारेण आज समाज में प्रचलित है यदा कदा यह भी देखने को मिलता है ब्राहमण,क्षत्रिय एक दूसरे के कर्म को भी करते थे ।

सदाचार

महाकवि ने अपने महनीय ग्रन्थ युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में सदाचार के महात्मय को बड़े सुन्दर रूप में चित्रित किया है कि दुर्योधन की सभा में भगवान श्री कृष्ण विश्वरूप दर्शन के अट्टहास किया परन्तु सदाचार के द्वारा सम्पूर्ण सभा में श्री कृष्ण विश्वरूप स्तुति की गई–

वादिभिरेततत्वं ध्रुवमिति यद्यन्मतं हरे तत्वम् ।
तमसासमस्त मयाय प्रभो नमस्ते समस्तमयाय।। [3]

जीवन अपने सामाजिक , धार्मिक विधि विधानों के द्वारा सदाचार की सार्वभौमिकता से ओत–प्रोत है। सदाचार की वैशिष्टता को विस्तारित करते हुए भारतीय मनीषा की सम्पूजा की है।

अतिथि सत्कार

महाकवि ने युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में तत्कालीन समाज में अतिथि सत्कार का विशेष योगदान प्रतिपादित किया है क्योंकि राजा द्रुपद ने पाण्डवों को पहचान कर हर्षित मन से बपने नगर में बुलाकर अतिथि का मान दिखाया–

तदनुद्रुपदेन पुरंगमितैः सविचार मुदार मुदा गमितैः।
न देव सुतै रूदवाहि वधूर्विधिनैव च सा वचसादिसुनैः।।

इस प्रकार से कुन्ती ने गणपति और मित्र सूर्यको सन्तुष्ट करके अपने पति द्वारा अर्चन के लिए प्रेरित किए जाने पर अत्यन्त सत्कार के साथ यम,वायु और इन्द्र की पूजा किया। [5]
तत्पश्चात युधिष्ठिर ने सर्वप्रथम श्री कृष्ण का अतिथि सत्कार कर उन्हें जरासंध के वध के लिये भेज दिया। [6]

विवाह

भारतीय आचार्यो के अनुसार पुत्र के बिना पुरूष को परलोक में सद्गति की प्राप्ति नही होती इसलिए स्त्री पुरूष का दाम्पत्य जीवन आवश्यक है। [7]
देवताओं के साथ बलधारी बलदेव सहित यादवों के अन्यत्र व्यग्र हो जाने पर प्रसन्न मन से अर्जुन ने श्री कृष्ण पद्मनाभ के साथ यदुग्रह में सुभद्रा का पाणिग्रहण अर्थात् उसके साथ विवाह किया–

यदुषु सबलदेवेषु व्यग्रेष्वन्यत्र तुलितबलदेवेषु ।
मुदित मना भोज ग्रहे पाणिमुपेतपद्मनाभो जग्रहे।।

अपि च

तदनुद्रुपदेन पुरं गमितैः सविचार मुदार मुदा गमितैः।
नरदेव सुतै रूदवाहि वधूर्विधिनैव च सा वरसादिमुनेः।।

इसका तात्पर्य है कि राजा द्रुपद ने पाण्डवों को अपने नगर बुलवाया और राजपुत्र युधिष्ठिर ने मुनि श्री व्यास जी की आज्ञा से विधिपूर्वक वधू द्रोपदी के साथ विवाह सम्पन्न किया।

पति–पत्नी सम्बन्ध

आदिकाल से ही समाज में पति–पत्नी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है और हमारे सामाजिक व्यवस्था में भी कवि ने चित्रित किया है कि –पत्नी –पति का आधा भाग हैं। जब तक पुरूष विवाहित नही और पुत्र उत्पन्न नही करता तब तक वह अपूर्ण है। गृहस्थ जीवन के लिए पत्नी का होना आवश्यक है।
यहाँ पर दृष्टव्य है महाकाव्य का यह श्लोक –

श्लिष्टोनयों किमु भवेदुत नैव सन्धि।
र्देहाध्रयोर्धटितयोरिति तत्परीक्षाम् ।।

स्त्री सम्मान

महाकाव्य के विधिवत परिशीलन से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा अति सुदृढ़ थी तथा समाज में स्त्रियॉ मुख्यतः दो कोटि की थी एक देवियाँ, रानियाँ दूसरी कोटि में कुलवधू एवं तृतीय श्रेणी के अन्तर्गत दासी स्त्रियों का भी वर्णन मिलता है।पति का त्याग करने वाली एवं सतीत्व का परिचय देनी वाली कुन्ती और माद्री ज्वलन्त उदाहरण है –

श्रितपरमाद्री शान्तं पाण्डु कुन्ती तथैव माद्री शान्तम्।
तं भर्तारं भार्ये न कदाचिज्जहतुरभिमतारम्भार्ये ।।

द्रोपदी की उदारता एवं शालीनता का वर्णन किया गया है। महाकाव्य में स्त्री सम्मान को अधोलिखित शब्दो द्वारा वर्णित किया गया है–

मदस्त्रीसार्थ [9], वधूमादाय [10], स्त्रीभर्तुद्वशे [11], जाया [12], जानकी [13] ।

शास्त्रगत उक्ति भी है कि–

यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता ।।

अन्य

महाकाव्य के सम्पूर्ण परिशीलन से अन्य अनेक सामाजिक व्यवस्थाएं एवं मान्यतायें प्राप्त होती है –

वेश–भूषा

समाज में वेश–भूषा का विशिष्ट महत्व है । वेश–भूषा के द्वारा ही सामाजिक सभ्यता का बाध होता है। महाकवि ने भी महाकाव्य में वेश–भूषा के सम्बन्ध में यथास्थान कतिपय वस्त्रों की जानकारी प्राप्त होती है कि उस समय में भी अपनी परम्परानुसार लोग वस्त्र धारण करते थे। अर्जुन के विषय में मृग चर्म को धारण करने का उल्लेख करने का उल्लेख प्राप्त होता है [14] । भिक्षुक लोगों के अलग प्रकार के वस्त्र प्राप्त करने का वर्णन मिलता है। कही–कही बल्कल वस्त्रो का महात्मय भी प्रतिपादित किया गया है।[15] द्रोपदी के द्वारा टुकुल टुकुल आदि वस्त्रों का वर्णन मिलता है।

रत्न आभूषण

भारतवर्ष में शरीर संस्कार करके उसे रमणीय बनाने की प्रथा आदिकाल से प्रचलित है श्रृंगार के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि स्त्री पुरुष दोनों ही सुगन्धित पुष्पों की माला को धारण करते थे। प्रसाधन हेतु समाज में रत्न जड़ित आभूषणों का प्रचलन था अनेकप्रकार के आभूषणों से स्त्री पुरुष सदैव सुसज्जित रहते थे। स्त्रियों में आभूषणों के प्रति विशेष अनुराग था –
वलय आभूषणों का सुन्दर परिदृश्य –

अथनव कोकनदेन क्षितिः क्षणत्कुररहंस कोकनदेन ।
रममाणविशेषण प्रात्यत योषेव भूषण विशेषण ।।[17]

महाकाव्य में चित्रण मिलता है कि अनेन बहुमूल्य रत्न भाग्य क्रम को बदलने में समर्थ होते है।

शारीरिक सौष्ठव

"शरीर आद्यं खलु धर्म साधनम्" अर्थात् शरीर ही है जो प्रत्येक कर्म धर्म का साधन है इसलिए आवश्यक है शरीर को स्वस्थ एवं सुगठित किया जाये जिससे प्रत्येक दिशा में मनोवान्छित कर्म सम्पादित किये जा सके । माता कुन्ती दुःख के कारण कूशकाय तो भीष्म और हिडिम्बासुर अत्यधिक बल को धारण करने वाले थे और बांकासुर भी अत्यधिक पराक्रमी था वामन शरीर की भयंकरता एवं विशालता का वर्णन प्राप्त है।

मैत्री भाव

जीवन का अभिन्न अंग मित्र ही है अपने मित्र के सुख दुःख को अपना सुख दुःख समझना मित्र का कर्तव्य है। श्रीकृष्ण और अर्जुन की मित्रता का परिचायक है यह श्लोक –

अथरमितो बासबिना कृष्णस्तत्रैव हलभृतोवास बिना।
प्रीतिरसेनाहानि स्वैरं कति चित्कृतारिसेना हानिः ।।[18]

महाकाव्य में उल्लेख प्राप्त होता हे कि – विदुर का कोई विश्वसनीय मित्र था जिसने रात्रि में आग लगाये जाने की सूचना पाण्डवों को दिया तथा उन्हें बाहर निकलने के लिए सुरंग भी बना दिया। [19]

द्यूत कीड़ा

महाकाव्य के समस्त अनुशीलनोंपरान्त सामाजिक व्यवस्था न कहकर बल्कि एक कुरूति के रूप में अनेक प्रकार के व्यसन भी पाये गयेजिसमें द्यूत कीड़ा और मद्यापान का उल्लेख अधिकाधिक रूप में प्राप्त हे। द्यूत कर्म में लीन रहते हुए व्यक्ति अपनी आर्थिकता सामाजिकता को अधोगति की अधोगति की ओर ले जाते है अभ्युन्निति का। सबसे भयानक घटक है। द्युत कीड़ा और अनेकानेक ऐसे ज्वलन्त उदाहरण – प्राप्त होते है जो महाकाव्य से जुड़े हुए है। युधिष्ठिर द्युत कीड़ा में ऐसे आसक्त हुए कि अपना समस्त राज्य हार गये अन्त में उन्होनें अपने आपको और अपने भाईयों तथा अपनी पत्नी तक को दांव पर लगा दिया और उनको भी हार गये।

शास्त्र सम्मत उक्ति भी कही गयी है कि –

"विनाश काले विपरीत बुद्वि ।"

द्युत कीड़ा द्वारा राज्य को जीत लेने के कारण एवं पाण्डवों को दास बना लेने के कारण वह गर्व से भर गया था –

तदनु स्मयमानेन द्रोपधे दर्पमधिकमयमानेन।
स्वीकृतराष्ट्रेणोरुः प्रदशितः सदसि धार्तराष्ट्रेणोरुः ।।[20]

सन्दर्भ सूची

1. ऋग्वेद –10/11
2. युधिष्ठिर विजय – 4/42/82
3. युधिष्ठिर विजय – 1/87,1/88
4. युधिष्ठिर विजय – 1/86
5. युधिष्ठिर विजय – 1/19
6. युधिष्ठिर विजय – 1/87,1/88
7. युधिष्ठिर विजय – 9/137, 9/138
8. युधिष्ठिर विजय – 1/62
9. युधिष्ठिर विजय – 1/72
10. युधिष्ठिर विजय – 1/95
11. युधिष्ठिर विजय – 2/58
12. युधिष्ठिर विजय – 3/71, 3/72
13. युधिष्ठिर विजय – 5/82
14. युधिष्ठिर विजय – 2/24
15. युधिष्ठिर विजय – 4/24
16. युधिष्ठिर विजय – 2/64, 2/65
17. युधिष्ठिर विजय – 5/24
18. युधिष्ठिर विजय – 2/39
19. युधिष्ठिर विजय – 1/35,1/36,1/33
20. युधिष्ठिर विजय – 3/30